ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE:2 7. 02 .2021

पाठ नाम - तुलसीदास के पद

तुलसीदास

जीवन परिचय- **गोस्वामी तुलसीदास** हिंदी साहित्य के महान कवि थे। इनके द्वाररचित रामचरितमानस लोक ग्रन्थ है और इसे उत्तर भारत में बड़े भक्तिभाव से पढ़ा जाता है। इसके बाद विनय पत्रिका उनका एक अन्य महत्त्वपूर्ण काव्य है। महाकाव्य श्रीरामचरितमानस को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में 46वाँ स्थान दिया गया। **श्री रामचरितमानस** अवधी भाषा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा १६वीं सदी में रचित एक इतिहास की घटना है। इस ग्रन्थ को अवधी साहित्य (हिंदी साहित्य) की एक महान कृति माना जाता है। इसे सामान्यतः 'तुलसी रामायण' या 'तुलसीकृत रामायण' भी कहा जाता है। रामचरितमानस भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है। रामचरितमानस की लोकप्रियता अद्वितीय है। उत्तर भारत में 'रामायण' के रूप में बहुत से लोगों द्वारा प्रतिदिन पढ़ा जाता है।

तुलसीदास के द्वारा लिखी गई रचानाएं

- रामचरितमानस
- रामलला नहछू
- बरवाई रामायण
- पार्वती मंगल
- जानकी मंगल
- रामाज्ञा प्रश्न
- कृष्णा गीतावली
- गीतावली
- साहित्य रत्न
- दोहावली
- वैराग्य संदीपनी
- विनय पत्रिका
- हनुमान चालीसा
- हनुमान अष्टक
- हनुमान बहुक

जे न मित्र दुःख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥

निज दुःख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुःख रज मेरु समाना॥1॥

भावार्थ –कविनुसार जो लोग मित्र के दुःख से दुःखी नहीं होते उन्हें देखने से ही बड़ा पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दुःख को धूल के समान और मित्र के धूल के समान दुःख को सुमेरु (बड़े भारी पर्वत) के समान जाने

जिन्ह कें असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा॥2॥

भावार्थ तुलसीदास जी सच्चे मित्र के गुणों को बताते हुए कहते है कि,जिन्हें स्वभाव से ही ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं है, वे मूर्ख हठ करके क्यों किसी से मित्रता करते हैं? मित्र का धर्म है कि वह मित्र को बुरे मार्ग से रोककर अच्छे मार्ग पर चलावे। उसके गुण प्रकट करे और
अवगुणों को छिपावे |

देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई॥
बिपति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा॥3॥

भावार्थ : तुलसीदास जी सच्चे मित्र के गुणों को परिभाषित करते हुए कहते है कि देने-लेने में मन में शंका न रखे। अपने बल के अनुसार सदा हित ही करता रहे। विपत्ति के समय तो सदा सौगुना स्नेह करे। वेद कहते हैं कि संत (श्रेष्ठ) मित्र के गुण (लक्षण) ये हैं

आगें कह मृदु बचन बनाई। पाछें अनहित मन कुटिलाई॥
जाकर ित्रचत अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई॥4॥

भावार्थ :एक सच्चा मित्र हमेशा ही बिपत्ति में सहायक होता है,लेकिन कुछ मित्र ऐसे भी है जो कपटी होते है, कविऐसे मित्रोंसे सावधानकरते हुए कहते है कि ,जो सामने तो बना-बनाकर कोमल वचन कहता है और पीठ-पीछे बुराई करता है तथा मन में कुटिलता रखता है- हे भाई! (इस तरह) जिसका मन साँप की चाल के समान टेढ़ा है ऐसे कुमित्र को तो त्यागने में ही भलाई है

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरें। सब बिधि घटब काज मैं तोरें॥5॥

भावार्थ : मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, कुलटा स्त्री और कपटी मित्र- ये चारों शूल के समान पीड़ा देने वाले हैं। हे सखा! मेरे बल पर अब तुम चिंता छोड़ दो। मैं सब प्रकार से तुम्हारे काम आऊँगा (तुम्हारी सहायता करूँगा)

"जल को गये लक्खन हैं लरिका,परिखौं,पिया!छाँ ँह घरीक हैं ठाढे।
पोंछि पसेउ बयारि करौं,अरु पायँ पखरिहौं भूभुरि डाढे"।।
तुलसी रघुबीर प्रिया स्रम जानि कै, बैठि बिलंब लौं कंटक काढे।
जानकी नाह को नेह लाख्यौं, पुलको तनु बारि बिलोचन बाढे।।(6)

श्रीराम, लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास की ओर चल पड़े हैं सीता जी के माथे पर पसीने की बूँदें छलक आई है तुलसीदास जी ने उनकी व्याकुलता और उनके प्रति श्रीराम के प्रेम का सजीव वर्णन इस पद्य में करते हैं। सीता जी कहती हैं कि लक्ष्मण जल लेने के लिए गए हैं अतः कहीं छाँव में खड़े होकर घड़ी भर के लिए उनकी प्रतीक्षा कर ली जाए तब तक मैं आपका पसीना पोछं कर पंखे से हवा किए देती हूँ और बालू से तपे हुए पैर धोए देती हूँ। तुलसीदास जी कहते हैं जब राम ने देखा कि राम जानकी थक गई है तो उन्होंने बहुत देर तक बैठकर उनके पैरों से कांटे निकाले। जानकी

सीता ने अपने स्वामी के इतने प्रेम को देखा तो उनका शरीर पुलकित हो उठा और उनकी आँखों में आँसू छल छला आए।

(7)

न पछितैहै अवसर बीते ।

दुरलभ देह पाइ हरिपद भजु , करम , बचन अरु ही ते ॥१॥

सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बलीते ।

हम - हम करि धन - धाम सँवारे , अंत चले उठि रीते ॥२॥

सुत - बनितादि जानि स्वारथरत , न करु नेह सबही ते ।

अंतहु तोहिं तजैंगे पामर ! तू न तजै अबही ते ॥३॥

अब नाथहिं अनुरागु , जागु जड़ , त्यागु दुरासा जी ते।

बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ , बिषय - भोग बहु घी ते ॥४॥

भावार्थः -अरे मन ! (मनुष्य - जन्मकी आयुका यह) सुअवसर बीत जानेपर तुझे पछताना पड़ेगा । इसलिये इस दुर्लभ मनुष्य शरीरको पाकर कर्म , वचन और हदयसे भगवानके चरण - कमलोंका भजन कर ॥१॥

सहस्त्रबाहु और रावण आदि (महाप्रतापी) राजा भी बलवान् कालसे नहीं बच सके , उन्हें भी मरना पड़ा । जिन्होंने 'हम - हम 'करते हुए धन और धाम सँभाल - सँभालकर रखे थे , वे भी अन्त समय यहाँसे खाली हाथ ही चले गये ॥२॥

पुत्र , स्त्री आदिको स्वार्थी समझ इन सबसे प्रेम न कर । अरे अधम ! जब ये सब तुझे अन्त समयमें छोड़ ही देंगे , तो तू इन्हें अभीसे क्यों नहीं छोड़ देता ?(इनका मोह छोड़कर अभीसे भगवानमें प्रेम क्यों नहीं करता ?) ॥३॥

अरे मूर्ख ! (अज्ञान - निद्रासे) जाग , अपने स्वामी (श्रीरघुनाथजी) - से प्रेम कर और हदयसे (सांसारिक विशयोंसे सुखकी) दुराशाको त्याग दे , (विषयोंमें सुख है ही नहीं , तब मिलेगा कहाँसे ?) हे तुलसीदास ! जैसे अग्नि बहुत - सा घी डालनेस्से नहीं बुझती (अधिक प्रज्वलित होती है) वैसे ही यह कामना भी ज्यों - ज्यों विषय मिलते हैं त्यों - ही - त्यों बढ़ती जाती है । (यह तो सन्तोषरुपी जलसे ही बुझ सकती है)

1.'मित्र के दुख रज मेरु समाना'- कौन कहता है ?यह पंक्ति किस ग्रन्थ से ली गई है?(2)

उ.तुलसीदास जी कहते है |

यह पंक्ति रामचरितमानस से ली गई है |

2. **सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बलीते ।**

हम - हम करि धन - धाम सँवारे , अंत चले उठि रीते

i) प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ अपने शब्दों में लिखे |

ii) प्रस्तुत पंक्ति के कवि कौन है ?

उ.i) इनपंक्तिओं केजरिए कवि कहते है कि सहस्त्रबाहु और रावण आदि (महाप्रतापी) राजा भी बलवान् कालसे नहीं बच सके , उन्हें भी मरना पड़ा । जिन्होंने 'हम - हम 'करते हुए धन और धाम सँभाल - सँभालकर रखे थे , वे भी अन्त समय यहाँसे खाली हाथ ही चले गये |

ii) **प्रस्तुत पंक्ति के कवि तुलसीदास जी है |**

शब्दार्थ

लक्खनु- लक्ष्मण

सुत-पुत्र

दुर्लभ- कठिनता से प्राप्त होनेवाला

कपटी- छली

सखा- मित्र

NAME-PRITI TIWARI